स्थापित : 13 अप्रेल 1987

RNI NO. : RAJHIN/2002/9625

शहीद जगत

राष्ट्रीय भावना एवं सामाजिक जनचेतना जागृत करने वाली हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्ष 15 अंक : 1 | कोटा, 15 जनवरी 2017 | पृष्ठ : 4 | मूल्य 2 रूपये

समाज को संस्कार एवं दिशा देने का कार्य कर रहा है आर्य समाज-राम कुमार मेहता

आर्य समाज के वार्षिकोत्सव में पर्यावरण संरक्षण का दिया संदेश

कोटा। आर्यसमाज समाज को संस्कार एवं दिशा देने का कार्य तत्परता से कर रहा है। यज्ञ के माध्यम से आप परिवारों में संस्कारों को जीवित कर रहे हैं।

पॉलिथिन के विरूद्ध मुहिम इत्यादि कार्यक्रमों

उक्त विचार नगर विकास न्यास के चैयरमेन रामकुमार मेहता ने आर्य समाज तलवण्डी के वार्षिकोत्सव में मुख्य अतिथि के रूप में अपने संबोधन में व्यक्त किए।

उन्होंने कहा कि स्वामी दयानंद सरस्वती के बताये वेद मार्ग पर चलते हुए आर्य समाज धर्म की स्थापना का कार्य और अधिक जोर शोर से करे।

इस अवसर पर कार्यक्रम के संयोजक राधा वल्लभ राठौर ने बताया कि वार्षिकोत्सव के द्वितीय दिन आर्यसमाज में पर्यावरण संरक्षण का संदेश देते हुए आगरा उत्तरप्रदेश से पधारे हरिशंकर अग्निहोत्री ने कहा कि प्रदूषण न फैलाये, अधिक से अधिक वृक्षारोपण करे तथा पर्यावरण प्रदूषण के निवारण के लिए अग्निहोत्र हवन करे। यज्ञ से पर्यावरण प्रदूषण दूर होता है व रोगों के किटाणु नष्ट होते हैं।

कार्यक्रम का प्रारंभ प्रात: आचार्य अग्निमित्र शास्त्री के ब्रह्मत्व में देवयज्ञ से हुआ। यज्ञ में ओंकार सिंह आर्य, श्योराज वशिष्ट तथा क्षेत्रपाल आर्य के साथ वेदमंत्रों के उच्चारण पूर्वक यजमानों ने आहुति दी।

कार्यक्रम में वृद्धिचंद आर्य ने स्वामी श्रद्धानंद के जीवन के विभिन्न प्रसंगों को सुनाकर उनके आदर्श पर चलने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर आर्य समाज जिला सभा कोटा के प्रधान अर्जुन देव चड्ढा पर्यावरण बचाने के लिए जिला सभा के माध्यम से किये जा रहे वृक्षारोपण, जल संरक्षण, की जानकारी दी।

आर्य समाज तलवण्डी के प्रधान रामचरण आर्य ने कार्यक्रम के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि चण्डीगढ से पधारे पं. उपेंद्र आर्य ने प्रभुभक्ति, यज्ञ एवं वेद महिमा के भजन प्रस्तुत किए।

आर्य समाज के मंत्री भैरोलाल शर्मा ने बताया कि फरीदाबाद के भजनोपदेशक प्रदीप आर्य ने स्वामी दयानंद सरस्वती के जीवन की प्रतिज्ञा के प्रसंग को भावपूर्ण ढंग से गाकर सुनाया।

कार्यक्रम में आर्य समाज द्वारा नगर विकास न्यास के चैयरमेन रामकुमार मेहता को केसरिया दुपट्टा ओढाकर, स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मान किया गया। इस अवसर पर आर्य समाज द्वारा उनको सत्यार्थ प्रकाश भेंट किया गया। इस अवसर पर जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा, आर.सी. आर्य, भैरोलाल शर्मा, कैलाश बाहेती, श्रीचंद गुप्ता, प्रेमनाथ कौशल, डॉ. के.एल. दिवाकर , नरेश विजय, रामनारायण आर्य, ओमप्रकाश आर्य, श्रीमती इंदु आर्या, सुमनबाला सक्सेना, निरजा सक्सेना, निधि आर्या, आशा शर्मा आदि उपस्थित थे।

शांतिपाठ एवं प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

आर्य समाज तलवण्डी द्वारा नशामुक्ति अभियान

नशा कर शरीर को नष्ट करना ईश्वर का अपराधी बनना है

कोटा। तम्बाकू व इसके सेवन तथा अन्य प्रकार के सभी नशों जैसे- शराब, स्मैक, अफीम आदि से होने वाली गंभीर बिमारियों एवं दुष्परिणामों के बारे में आर्य समाज तलवण्डी ने मजदूरों को अवगत करा नशा छोडने का संकल्प दिलाया।

नशा मुक्ति अभियान के अंतर्गत आर्य समाज जिला सभा के तत्वाधान में आर्य समाज तलवण्डी कोटा द्वारा केशवपुरा चौराहे के निकट मजदूरों के बीच एक सभा का अयोजन किया गया। जिसमें श्रमिकों को नशा छोडने को प्रेरित किया गया।

मजदूरों के बीच सभा में आर्य समाज जिला सभा के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि नशा आज की बडी समस्या बन चुका है। नशे के कारण मजदूर परिवारों को अनेक समस्याओ का सामना करना पडता है। चड्ढा ने कहा कि मजदूर भाई नशा छोडकर धन बचाकर अपने बच्चों की शिक्षा पर खर्च करे।

इस अवसर पर आर्य समाज के वैदिक विद्वान आचार्य अग्निमित्र शास्त्री ने कहा कि शरीर परमात्मा का सर्वोत्तम उपहार है। योग एवं ध्यान द्वारा नशे का छोडा जा सकता है। इसके लिए आर्य समाज से सम्पर्क करें।

आर्य समाज के इस अभियान में सिक्ख धर्माचार्य ज्ञानी गुरूनाम सिंह ने कहा कि हर धर्म नशे के खिलाफहै। नशा करना धर्म के विपरित काम है। हमें धार्मिक नियमों का पालन करना चाहिए।

इस अवसर पर आर्य समाज तलवण्डी के प्रधान आर.सी. आर्य ने सभी मजदूरों से कहा कि नशे से न केवल शारीरिक हानि होती है अपितु आर्थिक नुकसान भी उठाना पडता है। इससे सामाजिक जीवन बिगड जाता है।

कार्यक्रम के अंत में आर्य समाज के मंत्री भैरोलाल आर्य ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। इस सभा मे 700-800 मजदूरों ने उपस्थित होकर आर्य समाज के संदेशों को सुना।

इस अवसर पर आर्य समाज जिला सभा प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा, आर्य विद्वान आचार्य अग्निमित्र, सिक्ख धर्माचार्य ज्ञानी गुरूनाम, आर्य समाज तलवण्डी के प्रधान आर.सी. आर्य, मंत्री भैरोलाल शर्मा, शिवदयाल गुप्ता, वाई.आर. कुम्हरा, श्रीचन्द गुप्ता, रामप्रसाद याज्ञिक, सुखराज सोनी, मनीष गुप्ता, सूरजसिंह यादव, राजीव आर्य, शांतनु शर्मा, कृष्णन राजगुरू, विनोद कुशवाह, श्रीमती इंदु आर्या, ओमलता चौहान, पीयुष चौहान, अरूणा अग्रवाल, चंद्रकांता सोनी, गुमान सिंह, किशन आर्य आदि उपस्थित थे।

वैदिक मंत्रों के साथ बही भजनों की सरिता

संस्कार युक्त समाज का निर्माण ही वेदों की अवधारणा: प्रो. दशोरा

आर्य समाज तलवण्डी का 40वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

कोटा। आर्य समाज महर्षि दयानन्द नगर तलवण्डी कोटा का सात दिवसीय 40वां वार्षिकोत्सव समारोह रविवार को सम्पन्न हुआ। समापन समारोह के मुख्य अतिथि कोटा विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. पीके दशोरा थे। वहीं विधायक चन्द्रकांता मेघवाल, पार्षद गोपालराम मण्डा, विवेक राजवंशी, सोनू गौतम, दादाबाडी भाजपा ब्लॉक अध्यक्ष भी समारोह में उपस्थित रहे। इस दौरान प्रात:काल से लेकर देर रात तक वैदिक मंत्र गुंजते रहे और मंत्रोच्चार के साथ देवयज्ञ का आयोजन किया गया। वार्षिकोत्सव के तहत वैदिक धार्मिक, आध्यात्मिक सत्संग समारोह का भी समापन हो गया।

समारोह को संबोधित करते हुए प्रो. दशोरा ने कहा कि अपौरूषेय वेदों की आम जन तक उपलब्धता महर्षि दयानन्द की देन हैं। जीवन जीने के वैदिक सिद्धान्त सार्वभौमिक हैं। प्रेम, सद्भाव और संस्कारों से युक्त समाज का निर्माण वेदों की अवधारणा है। आर्य समाज का इतिहास बलिदानों से भरा हुआ है। आजादी की लड़ाई

जिन क्रांतिकारियों ने लड़ी, उनको भी आर्य समाज से प्रेरणा प्राप्त होती थी। जिला प्रधान अर्जुन्देव चडढा ने कहा कि आर्य समाज के द्वारा संसार का उपकार ही प्रमुख उद्देश्य है।

वैदिक विद्वान हरिशंकर अग्निहोत्री ने कहा कि संतानों को संस्कार देना माता पिता का कर्तव्य है। किन्तु इसके लिए पहले उनकी खुद का जीवन अनुशासित एवं श्रेष्ठ बनाना होगा। हमें महापुरूषों को अपना आदर्श बनाना चाहिए, न कि फिल्म एवं टेलीविजन के सितारों को। आचार्य अग्निमित्र शास्त्री ने 'श्रद्धा' शब्द की व्याख्या करते हुए कहा कि सत्य को धारण करना ही श्रद्धा है। अन्धविश्वास एवं पाखण्ड से दूर रहकर परमेश्वर की भक्ति श्रद्धा कहलाती है। बीना आर्य ने कहा कि महिलाएं अपने व्यवहार के द्वारा परिवार को स्वर्ग बना सकती हैं।

इस दौरान यज्ञ के माध्यम से लोगों में आध्यात्मिक भावना के विकास एवं पर्यावरण के शुद्धिकरण के लिए आचार्य अग्निमित्र के ब्रह्मत्व में देवयज्ञ का आयोजन किया गया। प्रतिदिन अलग अलग यजमानों के द्वारा आहुतियां प्रदान की गई तथा राष्ट्र समृद्धि व विश्वकल्याण की कामना की गई। चण्डीगढ के विद्वान पं. उपेन्द्र आर्य ने ईश्वर भक्ति की महिमा के भजन प्रस्तुत किए। फरीदाबाद से आए भजनोपदेशक पं. प्रदीप आर्य ने वेद महिमा एवं स्वामी दयानन्द के गुणगान के भजनों की प्रस्तुति दी। मंत्री भैरोलाल आर्य ने प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

इस दौरान प्रधान आरसी आर्य, मंत्री भैरालाल आर्य, कार्यक्रम संयोजक राधाबल्लभ राठौर, लालचन्द आर्य, द्वारकाप्राद तिवारी, ओमप्रकाश आर्य, ओंकार सिंह आर्य, क्षेत्रपाल आर्य, रामप्रसाद याज्ञिक, सुरेश गुप्ता, शिवदयाल गुप्ता, सुमनबाला सक्सेना, श्रीकुमार खुराना, नमिता खुराना, किशन आर्य, शान्तनु शर्मा, कृष्णन रामगुरू, कुलदीप आर्य, डॉ. कुलवंत गौड, रामगोपाल यादव, आरसी बिरला, विष्णु गर्ग, डॉ. परमानन्द, छभ्तरलाल नामा, प्रियंवदा धूत, राजाराम आर्य, ओमप्रकाश रावतभाटज्ञ, बिरधीचन्द आचार्य समेत कई लोग उपस्थित थे।

मासिक
शहीद जगत
कोटा, 15 जनवरी 2017

सम्पादकीय

राहुल के हास्यास्पद बोल

पहले खून की दलाली का बेतुका जुमला फिर संसद में अपने भाषण से भूचाल लाने की चेतावनी और अब प्रधानमंत्री के भ्रष्टाचार की जानकारी होने का दावा, राहुल गांधी के ये बयान इसी धारणा को मजबूत कर रहे हैं कि वे बिना सोचे-समझे बोलते हैं और इस क्रम में इसकी परवाह नहीं करते कि कहीं इससे खुद उनका ही उपहास तो नहीं उड़ेगा। राहुल का ताजा बयान प्रधानमंत्री पर बड़ा राजनीतिक हमला कम, हास्यास्पद हमला अधिक है। अगर उनके पास प्रधानमंत्री के कथित भ्रष्टाचार के बारे में कोई जानकारी है तो आखिर वह उसे संसद में ही क्यों बताना चाहते हैं? क्या लोकसभा कोई अदालत है जहां उनका बयान गवाही की शक्ल ले लेगा? यह तो सबको पता है कि किसी विधानमंडल में उसके सदस्य को कुछ भी कहने की स्वतंत्रता है, लेकिन राहुल यह साबित करने की बेजा कोशिश कर रहे हैं कि विधायी सदन में कही गई कोई बात अकाट्य प्रमाण में तब्दील हो जाती है। जब ऐसा कुछ नहीं है तब फिर बेवजह की सनसनी का क्या मतलब? आखिर वह संसद परिसर में या फिर अपने दफ्तर में या अन्यत्र कहीं, वह सब कुछ क्यों नहीं कह देते जो कहना चाह रहे हैं और जिससे प्रधानमंत्री मुसीबत में पड़ जाएंगे? बेहतर हो कि वह बेतुके बयानों से अपनी जगहंसाई कराने के बजाय अपने ही दल के उन नेताओं से कुछ सीखें जिन्होंने बीते दिवस ही मीडिया को बुलाकर केंद्रीय गृह राज्यमंत्री किरण रिजिजू के कथित भ्रष्टाचार की जानकारी दी थी। जो काम किसी केंद्रीय मंत्री पर आरोप लगाने के मामले में हो सकता है, वह प्रधानमंत्री के मामले में क्यों नहीं हो सकता? राहुल गांधी ने एक सप्ताह के अंदर दूसरी बार यह बयान दिया है कि उन्हें संसद में बोलने से रोका जा रहा है। जब यह साफ है कि विपक्ष बहस से भाग रहा है, तब राहुल के बार-बार यह कहने का कोई मतलब नहीं कि उन्हें संसद में बोलने नहीं दिया जा रहा है। अगर विपक्ष सचमुच संसद चलने देने के लिए आतुर है तो वह तरह-तरह के बहाने बनाने और नारेबाजी करने में अपनी ऊर्जा क्यों खपा रहा है? यदि यह मान भी लिया जाए कि लोकसभा में बहस की नौबत इसलिए नहीं आ रही कि सत्तापक्ष मत विभाजन वाले नियम के तहत चर्चा को तैयार नहीं, तो भी क्या कारण है कि राज्यसभा चलने का नाम नहीं ले रही है? सभी इससे अवगत हैं कि राज्यसभा में नोटबंदी को लेकर चर्चा शुरू हो गई थी, लेकिन एक दिन बाद विपक्ष बहस से बचने के जतन करने में मशगूल हो गया। उसने पहले मांग की कि प्रधानमंत्री जवाब दें। इसके बाद उनके बहस में शामिल होने की मांग की गई। जब ये मांगें पूरी हो गईं तो हंगामा करने के नए बहाने खोज लिए गए। क्या ऐसा इसीलिए किया गया, क्योंकि कांग्रेस समेत विपक्षी दलों को यह समझ आ गया है कि जनता का एक बड़ा वर्ग तमाम परेशानी के बावजूद नोटबंदी का समर्थन कर रहा है? विपक्ष चाहे जैसे दावे करे, जनता अच्छे से जान रही है कि उसकी दिलचस्पी संसद को न चलने देने में है।

आत्म चिंतन कर जीवन का सुधार करें: डॉ. विनय विद्यालंकार

केन्द्रीय कारागार में आर्य समाज द्वारा वैदिक आध्यात्मिक सत्संग का आयोजन

कोटा। आत्मचिंतन कर जीवन का सुधार करें। अपने अंदर श्रेष्ठ विचारों को उत्पन्न करें। जिससे श्रेष्ठ कर्म करते हुए जीवन को बेहतर बनाया जा सके। उक्त विचार आर्य समाज के अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक विद्वान डॉ. विनय विद्यालंकार ने जेल में कैदियों को संबोधित करते हुए व्यक्त किए।

केन्द्रीय कारागार कोटा में आर्य समाज के वैदिक आध्यात्मिक संत्संग में उन्होंने कहा कि उत्तम कर्मों से मनुष्य देव बन जाता है और अधम कर्मों से राक्षस बन जाता है। किसी से द्वेष मत करो। यहां से जाकर सबसे प्रेमयुक्त व्यवहार करना। ईर्ष्या और द्वेष हमारी शक्ति को खत्म कर देते हैं। प्रतिदिन प्रार्थना करे कि ऐ मेरे मन के पाप मुझसे दूर चला जा। दूसरों का सुख देने का प्रयास करोगे तो स्वयं सुखी अनुभव करोगे। फूल के समान परोपकारी जीवन जीने का प्रयास करो।

इससे पूर्व आर्य समाज जिला सभा के नेतृत्व में जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा के साथ डॉ. विनय विद्यालंकार अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक विद्वान आचार्य अग्निमित्र शास्त्री, आर्य विदुषी डॉ. सुदेश आहुजा, रामचरण आर्य प्रधान आर्य समाज तलवण्डी, ओमप्रकाश तापड़िया प्रधान कतलक नगर, जेएस दुबे पूर्व प्रधान विज्ञान नगर, कर्ण सिंह आर्यमंत्री रेलवे कॉलोनी, उमेश कुर्मी मंत्री गायत्री विहार, लालचन्द आर्य पूर्व मंत्री तलवण्डी, राधा बल्लभ राठौर, श्रीमती इन्दु आर्या, राजीव आर्य तथा कैलाश बाहेती जिला मंत्री केन्द्रीय कारागार पहुंचे।

इस अवसर पर हाड़ौती के वैदिक विद्वान आचार्य अग्निमित्र शास्त्री ने कहा कि अज्ञान ही दुख एवं अपराध का कारण है। आर्य समाज अपने सन्देश से अज्ञान को दूर करने का कार्य करता है। क्रोध लोभ आदि वासनाएं ही दुख का मूल कारण है। इन भावनाओं पर विजय पाने का प्रयास करना चाहिए।

आर्य समाजत के इस आध्यात्मिक सत्संग में जिला सभा के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि नशा अपराध का सबसे बड़ा कारण है। अधिकतर अपराध व्यक्ति नशे की हालत में करता है। इसलिए शराब, स्मैक,गांजा, बीड़ी, तम्बाकू आदि सभी प्रकार के नशों को त्यागों।

कार्यक्रम का प्रारंभ ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना के मंत्रों के साथ हुआ। इस अवसर जेल अधीक्षक सुधीर कुमार पूनिया ने अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक विद्वान डॉ. विनय विद्यालंकार का पंचरंगी साफा पहनाकर अभिनन्दन किया तथा आर्य समाज के आगन्तुक अतिथियों का माल्यार्पण कर स्वागत किया।

इस अवसर पर आयु विदुषी डॉ. सुदेश आहुजा ने अपने उद्बोधन में कहा कि अपराध है तो उनसे बचने के उपाय भी हैं। जीवन में मानवीय गुण अपनाएं। सभी की उन्नति में अपनी उन्नति समझें।

आर्य समाज तलवण्डी के प्रधान रामचरण आर्य दूसरों के गुण अपनी गलतियों देखा करो...भजन प्रस्तुत किया। वैदिक आध्यात्मिक सत्संग में जेल अधीक्षक सुधीर कुमार पूनिया ने आर्य समाज का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि बार्य समाज ने जीवन को नए तरीके से जने का जो मार्गदर्शन दिया है। उसे अपनाकर अपने जीवन को सुगम बनाएं।

आर्य समाज की ओर से जेएस दुबे ने इस वैदिक सत्संग के आयोजन के लिए जेल प्रशासन का आभार प्रकट किया।

अन्त में ओमप्रकाश तापड़िया द्वारा शान्तिपाठ उच्चरण पूर्वक कार्यक्रम का समापन हुआ।

4760 लोगों ने पिया औषधीय काढ़ा

लाजपत राय जनहित ट्रस्ट द्वारा निशुल्क काढा वितरण

कोटा। चिकनगुनिया-डेंगु से बचाव हेतु लाजपत राज जनहित ट्रस्ट द्वारा औशधिय काढा पिलाया गया।

कार्यक्रम के संयोजक एवं ट्रस्टी रामचंद्र मलिक ने बताया कि लाजपत राज जनहित ट्रस्ट द्वारा आज प्रात: 10 बजे से ही ट्रस्ट भवन के मुख्य द्वार पर औषधीय काढा पीने वालों की लाइन लग गई। आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चढ्डा व पतंजलि योग समिति के राज्य प्रभारी अरविंद पाण्डेय के निर्देषन में यह औशधिय काढा तैयार किया गया।

अर्जुनदेव चड्ढा ने बताया कि औशधि काडा गिलोय, मुस्तक, चिरायता, नीम, तुलसी, पीपल, जटामासी, भुई आंवलाख् अडूला, पितपापडा आदि से तैयार कर वितरित किया गया। यह औशधीय काढा पीने से षरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढती है। मैनेजिंग ट्रस्टी सुधीर जैन ने बताया कि ट्रस्टी श्रीमती तनुजा खन्ना, डा. सी.पी. वर्मा, सुभाश जैन, प्रितपाल सिंह साहनी, दर्षन पिपलानी, षक्ति कोहली, वीरेंद्र कोहली, किषन सिंह, आर्य समाज के अरविंद पाण्डेय, कैलाष बाहेती, आचार्य अग्निमित्र षास्त्री, राजेंद्र आर्य, राजीव आर्य, पतंजली योग समिति के जिला प्रभारी विवेक गर्ग, प्रहलाद सिंह ने काढा वितरण में सहयोग किया। मैनेजिंग ट्रस्टी डा. संजय मलिक ने बताया कि काडा वितरण सायं 4 बजे तक किया गया जिसमें 2760 लोगों ने काडा पिया तथा 2000 लोगों का काडा कांच की बोतलों, स्टील के जग, मग, केतलियों में भरवाकर अपने घर ले गए।

उन्होनें बताया कि लाजपत राय जनहित ट्रस्ट द्वारा इस माह में आज तक दस हजार लोगों को औशधिय काडा पिलाया गया।

आर्यसमाज खेड़ारसूलपुर के चुनाव सम्पन्न

रामनारायण प्रधान व बंसीलाल मंत्री निर्वाचित

कोटा। आर्यसमाज खेड़ारसूलपुर के सभा भवन में आयोजित आमसभा

आर्यसमाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चढ्डा की अध्यक्षता में आयोजित की गई। जिला सभा द्वारा मनोनीत चुनाव अधिकारी जे.एस.दुबे, सहचुनाव अधिकारी लालचंद आर्य व पर्यवेक्षक कैलाश बाहेती ने आर्यसमाज खेड़ारसूलपुर के वर्ष 2017-18 के द्विवार्षिक चुनाव सम्पन्न कराए। चुनाव से पूर्व पुरानी कार्यकारिणी को भंग कर नए चुनाव में सर्वसम्मति से निम्न प्रकार कार्यकारिणी का गठन किया गया। प्रधान रामनारायण कुशवाह, मंत्री बंसीलाल रेनवाल, कोषाध्यक्ष हीरालाल गहलोत, उपप्रधान रामस्वरूप सैनी, उपमंत्री रामकल्याण राठौर, पुस्तकालयाध्यक्ष कैलाश नामा, कार्यकारिणी सदस्य रामस्वरूप गूर्जर, कुलदीप आर्य, ओमप्रकाश आर्य, मूलचंद नाना, हेमराज कुशवाह। निर्वाचित प्रतिनिधियों का जिलासभा के प्रधान अर्जुनदेव चढ्डा, जिला मंत्री कैलाश बाहेती, कोषाध्यक्ष जे.एस. दुबे, लालचंद आर्य तथा आर्य विचारक मोडूलाल सैनी ने माल्यार्पण कर स्वागत किया।

पंजाबी समाज ने झोंपड़ पट्टी में बच्चों को कपड़े बांटे

कोटा। पंजाबी जनसेवा समिति द्वारा आज दादाबाड़ी तिराहा स्थित झोंपड़पट्टी में मजदूर परिवारों के बच्चों को कपड़े वितरित किए।

पंजाबी जनसेवा समिति के अध्यक्ष अर्जुनदेव चढ्डा के साथ महामंत्री दर्शन पिपलानी, लेखराज वाधवा, योगराज कुमरा, प्रियंका अदलक्खा, यशोदा निझावन, सीमा पिपलानी, आर्यसमाज तलवंड़ी के प्रधान रामचरण आर्य मजदूर बस्ती पहुंचे।

समिति की ओर से वहां रह रहे मजदूर परिवारों के बच्चों ,लड़के-लड़कियों को उनके नाप के हिसाब से कपड़े दिये। कुछ बच्चों को समिति की सदस्य महिलाओं ने स्वंय कपड़े पहनाए। कपड़े पाकर बच्चे बहुत प्रसन्न हुए। कुछ महिलाओं, पुरूषों को गर्म वस्त्र भी दिये गये। सभी ने समिति का आभार जताया।

शिक्षा की अभिनव क्रांति के प्रस्तोता विलक्षण व्यक्तित्व स्वामी श्रद्धानन्द

भारतीय गुरूकुल शिक्षा पद्धति के पुनरूद्धारक स्वामी श्रद्धानन्द

आचार्य अग्निमित्र शास्त्री

19वीं शताब्दी में अंग्रेजों के सम्पूर्ण भारत में शासन स्थापित करने के साथ ही भारत में लॉर्ड मैकाले के द्वारा अंग्रेजी शिक्षा पद्धति का प्रारम्भ इस उद्देश्य से किया गया कि अंग्रेजी शिक्षा से शिक्षित शीघ्र ही रंग रूप में भारतीय होते हुए भी मन एवं रहन सहन से अंग्रेज बन जायेंगे और अंग्रेजी साम्राज्य के स्थिरीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेंगे तथा हुआ भी वैसा ही।

अंग्रेजों की इस कूटनीतिक चाल को सर्वप्रथम समझा प्रख्यात आर्यसमाजी समाजसुधारक एवं क्रांतिकारी स्वामी श्रद्धानंद ने। अपने वैचारिक चिन्तन में उन्होंने अनुभव किया कि अंग्रेजी शिक्षा पद्धति भारतीयों को केवल मानसिक गुलाम तो बना सकती है किन्तु उनका सर्वांगीण शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक विकास नहीं कर सकती।

शिक्षा के प्रति स्वामी दयानन्द सरस्वती के विचारों से प्रभावित आपने देश को नूतन शैक्षिक दृष्टिकोण देने के उद्देश्य से 1902 में स्वदेशी शिक्षा पद्धति के केन्द्र के रूप में हरिद्वार के कांगड़ी नामक स्थान पर पुरातन पद्धति के धरातल पर गुरूकुल कांगड़ी की स्थापना की।

जहां छात्रां को वैदिक परम्परा के अनुरूप ब्रह्मचर्याश्रम के साथ आधुनिक ज्ञान विज्ञान के विषयों के साथ-साथ ही वेद, वेदांग, दर्शन एवं उपनिषद की शिक्षा देने का शुभारंभ किया गया। आगे चलकर यही गुरूकुल विद्यालय गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

स्वामी श्रद्धानन्द चाहते थे कि यह शिक्षण संस्थान राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करे इसलिए उन्होंने एक संतुलित कसी हुई शिक्षा पद्धति का विकास किया जिसने आगे चलकर भारत में गुरूकुल आन्दोलन को जन्म दिया जिसके प्रेरणास्वरूप भारत में सैंकड़ों गुरूकुल स्थापित किये गये और वर्तमान में स्वामी रामदेव द्वारा चलाया जा रहा आचार्यकुलम की अवधारणा (कॉन्सेप्ट) इसी का परिवर्धित रूप है।

यह स्वामी श्रद्धानन्द के उस अदम्य साहस का ही परिणाम था कि गुरूकुल कांगड़ी के देखने उस युग के समस्त प्रमुख राजनेता, अधिकारी एवं शिक्षाविद् शिक्षा के इस नवीन प्रयोग गुरूकुल कांगड़ी को देखने आते थे। जिनमें डॉ. एम.ए. अंसारी, बैरिस्टर आसिफअली, सर आशुतोष मुखर्जी, लाला लाजपतराय, पं. मोतीलाल नेहरू, पं. मदनमोहन मालवीय, सेठ जमनालाल बजाज, श्रीमती सरोजनी नायडू, महाकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर और सर्वोपरि महात्मा गांधी प्रमुख थे।

यदि यह कहा जाए कि रवीन्द्रनाथ टैगोर को विश्व भारती की और महात्मा गांधी को साबरमती आश्रम की स्थापना में गुरूकुल कांगड़ी के भ्रमण से प्रेरणा मिली हुई हो तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। केवल भारत ही नहीं अपितु भारत की इस शिक्षा क्रान्ति के दर्शन करने के लिए विदेशों से भी अनेक महानुभाव

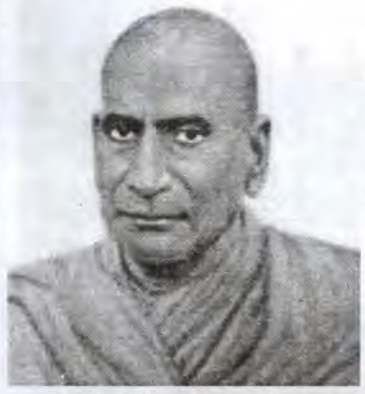

पधारे जिनमें प्रसिद्ध विचारक सी.एफएण्ड्रूज तथा भारत के वायसराय चेम्सफोर्ड प्रमुख थे। केवल गुरूकुल कांगड़ी ही नहीं अपितु भारत के प्रथम कन्या महाविद्यालय जालंधर की स्थापना का श्रेय भी आपको ही जाता है।

शिक्षा की इस अभिनव क्रान्ति के प्रस्तोता स्वामी श्रद्धानन्द का जन्म पंजाब के जालन्धर जिले के तलवन ग्राम में फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी विक्रम संवत 1913 (सन् 1856) में हुआ था। आपका पूर्वनाम मुंशीराम था। आपके पिताजी अंग्रेजीराज में पुलिस के उच्चाधिकारी थे। फ्लस्वरूप आपकी शिक्षा दीक्षा उच्च स्तर की हुई। आप पेशे से बैरिस्टर (वकील) थे। प्रसिद्ध समाज सुधारक स्वामी दयानन्द के सम्पर्क में आकर उनके विचारों से प्रभावित हो आपने वकालात के कार्य को छोड़कर अपना सम्पूर्ण जीवन आर्यसमाज के प्रचार एवं देशसेवा में लगा दिया।

स्वामी श्रद्धानन्द केवल एवं शिक्षाविद् की नहीं थे अपितु एक महान समाजसुधारक, क्रान्तिकारी, श्रेष्ठ राजनेता, समाजसेवी तथा निडर सन्यासी थे। स्वामी जी जातिवाद पर आधारित ऊंच नीच की भावना को देश के विकास में बाधा मानते थे इसके लिए आपने अछूतोद्धार तथा शुद्धि आंदोलन का सूत्रपात किया। हिन्दु महासभा की स्थापना में आपने महती भूमिका निभाई थी।

अपने विचारों को जन सामान्य तक पहुंचाने के लिए आपने पत्रकारिता को माध्यम बनाया। स्वंय की प्रेस स्थापित की और उसका नाम रखा गया सद्धर्म प्रेस। जहां से अंग्रेजी में द लिबरेटर एवं हिन्दी, उर्दू में सद्धर्म प्रचारक समाचार पत्र का सम्पादन एवं प्रकाशन आपके द्वारा किया जाता था। राष्ट्रभाषा के प्रति स्वामी श्रद्धानन्द का समर्पण विलक्षण था हिन्दी के लिए आपने सद्धर्म पत्र को जो पहले उर्दू में निकालता था हिन्दी में निकालना प्रारम्भ किया। हिन्दी के प्रति आपकी अनन्य भक्ति के कारण आपको चतुर्थ हिन्दी साहित्य सम्मेलन जो कि भागलपुर में आयोजित किया गया। आपको उसका अध्यक्ष मनोनीत किया गया।

राष्ट्रभक्ति स्वामी श्रद्धानन्द के अंदर कूटकूट कर भरी हुई थी। अंग्रेजों द्वारा भारतीयों पर अत्याचार के प्रतीक रोलेट एक्ट का विरोध करते हुए आपने गांधीजी के साथ सत्याग्रह का आवलम्बन किया और सम्पूर्ण देश में बड़ौदा, मुम्बई, सूरत, भड़ोच, अहमदाबाद इत्यादि स्थानों पर घूम-घूमकर जनता को सत्याग्रह के लिए प्रेरित किया। स्वतंत्रता संग्राम के आंदोलन में आप राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी के कई महत्वपूर्ण पदों पर रहे जलियावाला बाग की घटना के बाद अमृतसर में कांग्रेस का अधिवेशन स्वामी श्रद्धानन्द की निर्भीकता एवं कुशल नेतृत्व के कारण ही संभव हो सका।

स्वामी श्रद्धानन्द की विचारधारा समन्यवादी थी। वे हिन्दू मुस्लिम एकता के प्रबल समर्थक थे। मुस्लिम जन एवं नेता भी आपकी शख्सीयत के कायल थे। ये आपका सबको साथ लेकर चलने के हुनर का नायाब उदाहरण है कि विश्व इतिहास के आप पहले ऐसे गैर मुसलमान व्यक्ति थे जिन्होंने दिल्ली की प्रसिद्ध जामा मस्जिद में खड़े होकर वेदमंत्रों के उच्चारण पूर्वक मुस्लिम एवं हिन्दू दोनों को सम्बोधित किया।

किन्तु कुछ मजहबी लोगों को स्वामी श्रद्धानन्द की इस कार्यशैली से ईर्ष्या होती थी। इसी कारण एक धर्मान्ध व्यक्ति द्वारा 23 दिसम्बर 1926 को गोली मारकर स्वामी श्रद्धानन्द की हत्या कर दी गई। उनकी मृत्यु पर महात्मा गांधी ने कहा था "वे वीर के समान जिये, और वीर के समान ही मरे। वें धन्य और सौभाग्यवान होते हैं, ऐसे वीर जिन्हें ऐसी मृत्यु होती है।"

सी - 905 प्रेमनगर अफोर्डेबल कॉलोनी
कोटा (राज.)
मो. 09413094765

आर्य समाज ने पिलाया औषधीय काढ़ा

3485 लोगों ने पीया काढ़ा

कोटा। आर्य समाज तलवण्डी एवं आर्यसमाज जिला सभा कोटा के संयुक्त तत्वावधान में डेंगू, चिकनगुनिया एवं स्वाईन फ्लू से बचाव हेतु केशवपुरा चौराहे पर औषधीय काढ़ा पिलाया गया। आर्यसमाज द्वारा नि:शुल्क काढ़ा पिलाने के इस कार्यक्रम में 3485 लोगों ने काढ़ा पीया एवं लोग परिवार के लिए बर्तनों में ले गये।

औषधीय काढ़ा आर्यसमाज के प्रधान अर्जुनदेव चढ्डा, पतंजलि योग समिति के डॉ. परमानंद तलवण्डी के प्रधान आर.सी. आर्य की देखरेख में तैयार किया गया।

इसकी विशेषता बतलाते हुए आचार्य अग्निमित्र शास्त्री ने बताया कि ये काढ़ा शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है।

साथ ही शरीर में सुप्त अवस्था में पढ़े कीटाणुओं को भी समाप्त करता है।

आर्यसमाज जिला सभा के प्रधान अर्जुनदेव चढ्डा ने बताया कि नीम, गिलोय, कुल्वी, तुलसी, पीपल, नागरमोथा, चिरायता, मुस्तक, अडूला, सोंठ, कालीमिर्च, हल्दी, भुई, आंवला, मिश्री एवं गुड़ इत्यादि औषधियां डालकर तैयार किया गया।

आर्यसमाज तलवण्डी के वाईआर कुमरा, भैरोंलाल शर्मा, शिवदयाल गुप्ता, श्रीचंद गुप्ता, शान्तनु शर्मा, विनोद कुशवाह, किशन आर्य, गुमानसिंह, वेदभूषण आर्य, विष्णु गर्ग, कृष्णन राजगुरू, श्रीमती इंदु आर्या ने काढ़ा वितरण में सहयोग किया।

इस अवसर पर पतंजलि योग समिति के राज्य प्रभारी अरविन्द पाण्डेय एवं जिला प्रभारी प्रदीप शर्मा ने इस कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा कि अन्य स्थानों पर इस प्रकार के काढ़ा पिलाने के कार्यक्रम आयोजित किये जाने चाहिए।

आर्य समाज ने कैथून हाट में बांटे कपड़े के थैले

कोटा। पॉलिथिन की थैलियों का उपयोग बंद कर कपड़े के थैलों को उपयोग में लाएं। पॉलिथिन की थैलियां खाने से गायों की अकाल मृत्यु हो रही है। पॉलीथिन से होने वाले नुकसान

से स्वंय बचें व दूसरों को भी बचावें। यह संदेश आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चढ्डा ने कैथून हाट बाजार में कपड़े के थैले बांटते हुए लोगों को दिया।

इस अवसर पर आर्य समाज तलवण्डी से आर.सी आर्य, राधा वल्लभ राठौर, लालचंद आर्य, आर्यसमाज खेड़ारसूलपुर से रामनारायण, पुरूषोत्तम आर्य, मोडूलाल सैनी, कैलाश नामा, रामकल्याण राठौर, बंसीलाल, हीरालाल आदि ने कपड़े के थैले बांटे। हाट बाजार में सब्जी-फ्ल व आवश्यक घरेलु सामान खरीदने वालों ने आर्य समाज के पॉलिथीन के बैग हटाओ-कपड़े के थैले अपनाओ अभियान की सराहना की व भविष्य में पॉलिथिन का उपयोग नहीं करने का संकल्प किया।

मस्ती भरे माहौल में धूमधाम से मनाया लोहड़ी पर्व

कोटा। पंजाबी लोकगीत - सुन्दर मुन्दरिये होय, तेरा कोण विचारा होय, दुल्ला भट्टीवाला होय।

. पिछे-पिछे आन्दा मेरी चाल वेन्दा आई वे, मेरा लौंग गवाचा।

- गोरी दीया झांझरां बुलाउंदीया गईया
- लट्ठे दी चादर उते सलेटी रंग माहीआ
- वंगा किस घड़ीयां, षावा वंगां किस घड़ीयां, बई किस घड़ीयां घड़वाईयां

जैसे मधुर पंजाबी लोक गीतों से पंजाबी जनसेवा समिति द्वारा आज लोहड़ी का पावन पर्व बड़े उत्साह से मनाया गया।

रंगबाड़ी स्थित मधु स्मृति संस्थान के निराश्रित बच्चे व बालाजी बी.एड. कॉलेज की छात्राध्यापिकों के मध्य लोहड़ी का पवित्र त्यौहार बनाया गया। समिति के अध्यक्ष अर्जुनदेव चढ्डा ने लोहड़ी पर्व का महत्व बताया। चढ्डा ने कहा कि ऋतु परिवर्तन का पर्व है।

चढ्डा ने बताया कि लोहड़ी के पष्चात रातें छोटी व दिन बड़े होने लगते हैं। पंजाबी समाज में लोहड़ी के पावन पर्व पर जिन घरों में संतान प्राप्ति व पुत्र की षादी के बाद पहली लोहड़ी पर्व पर विषेश आयोजन किए जाते हैं व उन घरों में लोग बधाईयां देने जाते हैं। कार्यक्रम का षुभारंभ पंजाबी जनसेवा समिति के अध्यक्ष अर्जुनदेव चड्ढा, पूर्व पार्षद ईश्वर गंभीर, समिति के महामंत्री दर्षन पिपलानी, मयंक सेठी, संजय चंदा, उपदर्षन सिंह कपूर व बृजबाला निर्भीक ने लोहड़ी में अग्नि प्रज्वलित कर किया। उपस्थित महिलाओं ने पूजा अर्चना की। मूंगफ्ली, रेवड़ी, फूल्हे (पॉपकार्न) अग्नि में डालकर व परिक्रमा कर राष्ट्र की सुख समृद्धि

की मंगल कामना व विष्व षांति की प्रार्थना की। उपस्थित समिति के सदस्यों ने पंजाबी ढोल की थाप पर षानदार भांगड़ा व पंजाबी गीतों पर मस्ती भरे लोहड़ी उत्सव पर उपस्थित सभी छोटे-बड़े, पुरूश व महिलाओं व बच्चों ने सामुहिक नृत्य कर पंजाब का माहौल बना दिया। पंजाबी समाज के लोगों को अपने बीच पाकर निराश्रितों में खुषी का माहौल था वहीं बीएड की छात्राध्यापिकाएं पहली बार लोहड़ी उत्सव में भाग लेकर नृत्य कर कर अति प्रसन्न थीं। व एक दूसरे को लोहड़ी की बधाईयां दी।

इस अवसर पर पंजाबी जनसेवा समिति के अध्यक्ष अर्जुनदेव चढ्डा, ईष्वर गंभीर, मयंक सेठी, संजय चंदा, शक्ति कुमार कोहली, उपदर्षन सिंह कपूर, संजय चढ्डा, श्रीमती सीमा पिपलानी, श्रीमती प्रियंका अदलक्खा, श्रीमती लीना चड्ढा, डीएवी के धर्म शिक्षक शोभाराम आर्य उपस्थित थे।

नृत्य प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पंजाबी जनसेवा समिति की ओर से पुरस्कार वितरण कर उनका उत्साहवर्धन किया गया। सभी को रेवड़ी, मूंगफ्ली, फुल्हे का प्रसाद वितरित किया गया। इस अवसर पर बालाजी इंस्टीट्यूट आफ एज्यूकेशन के डायरेक्टर हरगोविंद निर्भीक एवं श्रीमती बृजबाला निर्भीक ने उपस्थित अतिथियों व सभी का आभार व्यक्त किया।

यज्ञ ही संसार का श्रेष्ठतम कर्म है

आर्य समाज का गायत्री विहार में वैदिक देवयज्ञ का आयोजन

कोटा। यज्ञ ही संसार का श्रेष्ठतम कर्म है। इसे करने से प्रत्येक प्राणीमात्र का कल्याण होता है। उक्त विचार आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने ब्राईटलैण्ड स्कूल में आर्य समाज गायत्री विहार द्वारा आयोजित देवयज्ञ में व्यक्त किए।

उन्होनें कहा कि परोपकार तथा सेवा ही यज्ञ की मूल भावना है। हमें सेवा के कार्य करते रहना चाहिए।

इससे पूर्व आर्य समाज गायत्री विहार के प्रधान अरविंद पाण्डेय के पौरहित्व में वैदिक देवयज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ में मुख्य यजमान वर्षा औंधिया, मनुभाई आडे, लीला आडे व अन्य उपस्थित यजमानों ने वेदमंनों के उच्चारण के साथ आहुतियां दी।

यज्ञ के उपरांत वैदिक सत्संग का भी आयोजन किया गय। इसमें यज्ञ के ब्रम्हा अरविंद पाण्डेय ने कहा कि वैदिक यज्ञ विज्ञान पूर्ण पद्धति है। यज्ञ में दी गई आहूतियां सूक्ष्म होकर प्रकृति के तत्वों को षुद्ध करने का कार्य करती है। इससे रोग के कीटाणु नष्ट होते

मनुभाई आडे ने अतिथियों का आभार व्यक्त किया। शांतिपाठ एवं प्रसादि वितरण के साथ कार्यक्रम का आयोजन किया।

दिव्यांग भी समाज के अभिन्न अंग-डॉ. विनय विद्यालंकार

आर्यसमाज ने दिव्यांगों को कम्बल शॉल दिये

कोटा। दिव्यांग भी समाज के अभिन्न अंग हैं। इनकी सेवा सहायता समाज के सभी वर्गों को करनी चाहिए। यथा सभ्य व दिव्यांगों को किसी भी रूप में प्रदान करें।

उक्त विचार आर्य विद्वान डॉ. विनय विद्यालंकार ने आर्यसमाज व पंजाबी समाज की ओर से विभिन्न स्थानों पर कम्बल-शॉल वितरित करते हुए व्यक्त किये।

अर्जुनदेव चढ्डा की अगुवाई में अग्निमित्र शास्त्री, आर.सी. आर्य, जे.एस. दुबे, ओमप्रकाश तापड़िया, पूनम चढ्डा, सीमा पिपलानी, सागर पिपलानी, ओमप्रकाश गुलाटी आदि के अलग-अलग जगह कम्बल-शॉल दिव्यांगों को बांटे।

आर्यसमाज ने निर्धन महिलाओं को कम्बल बांटे

कोटा। आर्यसमाज सदैव ही मानव कल्याणकारी कार्यों को करने में अग्रणी रहता है। सर्दी के इस मौस में सभी को गर्म वस्त्रों की आवश्यकता पड़ती है। आज आर्यसमाज जिला सभा द्वारा जरूरतमंद महिलाओं को कम्बल वितरित करते डीएवी स्कूल की प्राचार्या सरिता रंजन गौतम ने उक्त विचार व्यक्त किये।

आर्यसमाज जिलासभा के प्रधान अर्जुनदेव चढ्डा के साथ आर्यसमाज रामपुरा के प्रधान कैलाश बाहेती, तिलक नगर के प्रधान ओमप्रकाश तापड़िया, तलवंडी के प्रधान आर.सी. आर्य, भीमगंजमण्डी के प्रधान प्रेमनाथ कौशल, विज्ञाननगर के पूर्व प्रधान जे.एस.दुबे, तलवण्डी के पूर्व मंत्री लालचंद आर्य, आर्य विद्वान पंडित शोभाराम आर्य ने विज्ञाननगर आर्य समाज के मुख्य द्वारा पर जरूरतमंद 35 महिलाओं व 5 पुरूषों को कम्बल दिये।

कम्बल पाकर महिलाओं पुरूषों ने आभार जताया। बाहर से कोटा आकर मजदूरी करने वाले मनोज ने कहा कि मेरे पास औढ़ने के लिए कुछ नहीं था। आर्यसमाज ने आज कम्बल दिये हैं मैं ठण्ड से बच पाऊंगा।

निशुल्क आयुर्वेद चिकित्सा शिविर आयोजित

78 रोगियों की जांच कर परामर्ष दिया

कोटा। लाजपत राज जनहित ट्रस्ट द्वारा ट्रस्ट भवन में निशुल्क आयुर्वेद चिकित्सा

षिविर लगाया गया। पतंजलि चिकित्सालय जवाहर नगर की चिकित्सा प्रभारी डॉ. वर्शा गौतम ने 78 रोगियों की जांच कर उचित परामर्ष दिया। यह जानकारी मैनेजिंग ट्रस्टी सुधीर जैन ने दी।

ट्रस्ट के मैनेजिंग ट्रस्टी डॉ. संजय मलिक ने बताया कि डॉ. वर्शा गौतम ने महिलाओं, युवतियों, पुरूशों की जांच की। उन्होंने बताया कि अधिकांष रोगी जोडों के दर्द , चिकनगुनिया, मौसमी बिमारियों, मलेरिया, चर्म रोग, खांसी-जुकाम, ष्वेत प्रहर कटिषूल के रोगियों को जांच कर परामर्ष दिया गया।

अवैध चाइनीज मांझा विक्रय के विरुद्ध कार्यवाही के लिए दस्ते गठित

कोटा। नगर निगम ने शहर में प्रतिबंधित चाइनीज मांझा विक्रय करने वालों के विरूद्ध सख्त कार्यवाही करने का मन बना लिया है। गुरूवार को उपमहापौर सुनीता व्यास की अध्यक्षता में हुई एक बैठक में चाइनीज मांझा जप्त करने के लिए निगम के राजस्व, जनस्वास्थ्य, अतिक्रमण व अग्निशमन एवं आपदा प्रबंधन अनुभागों के कर्मचारियों के दस्ते गठित कर दिये गये और कार्यवाही के संबंध में आवश्यक निर्देश दे दिये गये है।

महापौर महेश विजय द्वारा चाइनीज मांझा विक्रेताओं के विरूद्ध सख्त कार्यवाही के उपायुक्त

आर्य समाज ने कोचिंग स्टूडेंट को 10 रूपये में दिये सत्यार्थ प्रकाश

कोटा। आर्य समाज जिलासभा कोटा एवं आर्य समाज तलवण्डी के संयुक्त

तत्वाधान में शहर के झालावाड़ रोड़ स्थित सिटीमॉल के बाहर कोचिंग छात्रों को दस रूपये मात्र में सत्यार्थ प्रकाश दिये गये।

जिलासभा के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा की अगुवाई में आचार्य अग्निमित्र शास्त्री, रामचरण आर्य, कैलाश बाहेती, शान्तनु शर्मा, कृष्णन राजगुरू एवं राजीव आर्य के दल ने सिटीमॉल के बाहर माइक से आवाज लगाकर कोचिंग छात्रों को बुला बुलाकर उत्साहपूर्ण माहौल में सत्यार्थ प्रकाश दिये गये। इस अवसर पर जिलासभा के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने जानकारी देते हुए बताया कि आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमरग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश जो कि 500 पृष्ठों का ग्रंथ है जिसकी कीमत 50 रूपये से अधिक है आर्य समाज द्वारा कोचिंग छात्रों को आर्य समाज के दल से लिये।

सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार के इस अवसर पर आचार्य अग्निमित्र शास्त्री ने ग्रंथ के बारे में छात्रों द्वारा पूछे गये प्रश्नों का उत्तर दिया एवं उनकी शंकाओं का समाधान किया।

स्वामी, प्रकाशक एवं सम्पादक अर्जुन देव चड्ढा द्वारा भुद्रक मनोहर पारीक द्वारा जनधारणा प्रिंटर्स, 70 समाचार पत्र परिसर, महावीर नगर प्रथम, कोटा से मुद्रित एवं 'आर्यभवन' 4-प-28, विज्ञाननगर, कोटा-324005 से प्रकाशित। फोन: 0744-2422428। प्रबन्ध सम्पादक राकेश चड्ढा।